1. बहादुर परी

एक लड़की थी। उसका नाम परी था। एक दिन वह अपनी सहेली के घर जा रही थी।अचानक उसे एक कुत्ता दिखाई दिया। परी घबरा गई।

उसने अपने आस-पास देखा तो कोई भी नहीं था। परी ने साहस किया और निडर बन गई। कुत्ता उसके पास आता जा रहा था। परी अब चुपचाप आगे बढ़ती जा रही थी। कुत्ते ने उसे सूंघा और पूंछ हिलाने लगा।

परी को अब पता चल गया कि कुत्ता उसे नुकसान नहीं करेगा। क्योंकि वह खुश था। उसने पापा से सुना था कि, कुत्ता जब भी खुश होता है तो पूंछ हिलाता है।

अब वह बिना डरे आगे-आगे चल रही थी। कुत्ता उसके पीछे-पीछे चल रहा था। तभी उसकी सहेली नीना का घर आ गया। उसने नीना को अपनी बहादुरी का किस्सा सुनाया।

2. किस बात की शर्म ?

मोहन कक्षा 2 में पढ़ता था। वह बहुत शर्मिला था। उसका एक दोस्त था। जिसका नाम दिनेश था। वह मोहन के साथ ही कक्षा में पढ़ता था। वे दोनों खूब सारी बातें करते थे।

एक दिन उनकी परीक्षा चल रही थी। दिनेश उसके बगल में ही बैठा हुआ था। मोहन को शौच लगने लगी। उसने बहुत कोशिश की, कि शौच को कुछ देर रोक सकूँ। लेकिन दर्द बढ़ता ही जा रहा था।

उसने चुपके से दिनेश को बताया तो, दिनेश ने अध्यापिका से कहने को कहा। अध्यापिका ने उनको बातें करते देख लिया। अध्यापिका ने उन्हें डांटते हुए कहा- दिनेश-मोहन बातें नहीं !

मोहन का दर्द बढ़ता ही गया। वह अध्यापिका को न कह पाया। आख़िरकार मोहन जैसे ही अध्यापिका को कहने को हुआ, उसकी पैंट शौच से खराब हो गई । सभी बच्चे जोर-जोर से हँसने लगे। अध्यापिका ने सब को चुप कराते हुए कहा - क्या बात हो गई मोहन ? मोहन ने सारी बात मैम को बताई।

मैम ने सभी बच्चों को समझाते हुए कहा - इसमें हँसने की क्या बात है ? टॉयलेट, पोटी और उल्टी तो कभी भी आ सकती है। इसे कहने में भला किस बात की शर्म ? टॉयलेट और पोटी तो बड़े-छोटे सभी करते हैं। कई बार तो दस्त की वजह से दिन में 3 या 4 बार पोटी जाना पड़ता है। इसके बारे में कहने में कोई शर्म की बात नहीं ।

मोहन और बाकी बच्चों को ये बातें अच्छी तरह समझ में आ गई।

3. अंधेरे से दोस्ती

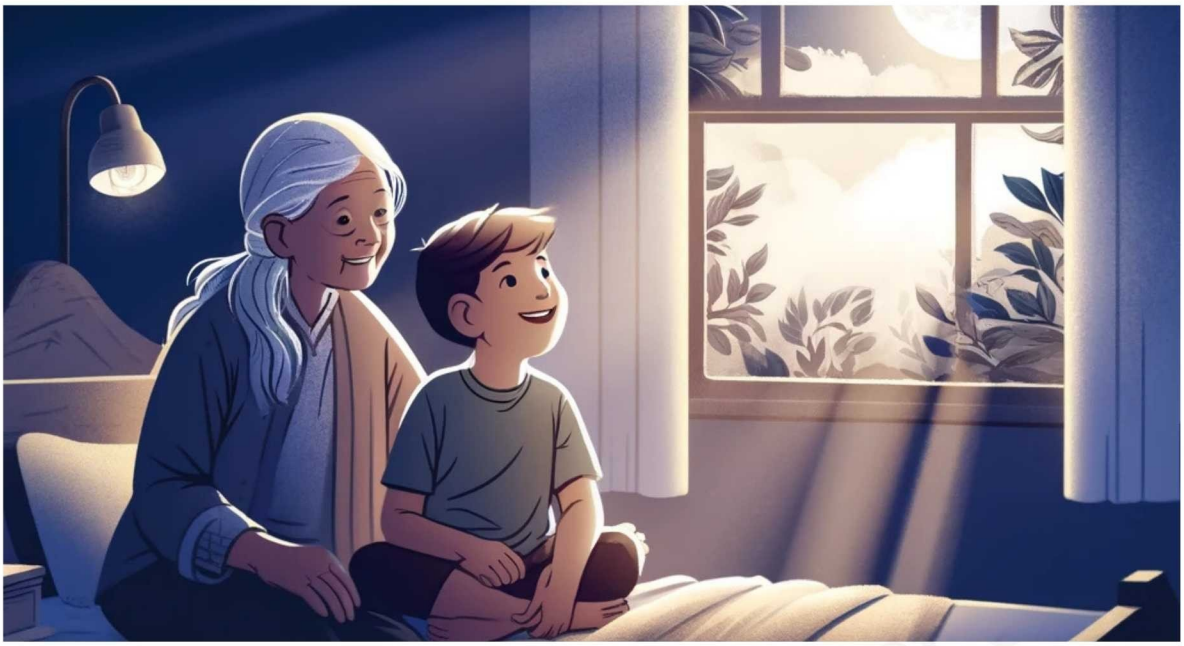

छोटे से गाँव में एक बच्चा रहता था जिसका नाम था रोहन। रोहन को अंधेरे से बहुत डर लगता था। रात होते ही वह डर के मारे अपनी माँ के पास दौड़कर चला जाता।

एक दिन रोहन की दादी ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, "रोहन, क्या तुम जानते हो कि अंधेरा भी एक कहानी सुनाने वाला दोस्त है?"

रोहन ने हैरानी से पूछा, "अंधेरा और दोस्त? वो कैसे, दादी?"

दादी ने मुस्कुराते हुए कहा, "जब सब कुछ शांत हो जाता है और अंधेरा छा जाता है, तब चाँद और तारे अपनी रोशनी से हमें बताने आते हैं कि हर अंधेरे के पीछे एक उजाला छिपा होता है। अगर तुम अपनी आँखें बंद करके सुनोगे, तो हवा की सरसराहट और पत्तों की फुसफुसाहट तुम्हें एक नई कहानी सुनाएंगे।"

उस रात रोहन ने हिम्मत करके खुद को अंधेरे के साथ अकेला रखा। उसने अपनी आँखें बंद कीं और ध्यान से सुना। उसे हवा की मीठी आवाज सुनाई दी, जो कह रही थी, "डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ।" पत्तों ने भी सरसराते हुए कहा, "हम यहाँ तुम्हें सुलाने के लिए गा रहे हैं।"

धीरे-धीरे रोहन को एहसास हुआ कि अंधेरे में डरने की कोई बात नहीं है। यह तो उसकी नई दोस्ती की शुरुआत थी। अब रोहन रात को निडर होकर सोता और अपने अंधेरे वाले दोस्तों की कहानियाँ सुनता।

4. चोरी बुरी आदत

विकास और अमन दोनों अच्छे दोस्त थे। एक दिन वे कक्षा में काम कर रहे थे। तभी अमन टॉयलेट करने को बाहर गया तो विकास ने उसकी नई पेंसिल छुपा ली। अमन ने वापस आकर अपनी पेंसिल ढूंढी तो नहीं मिली।

अमन ने विकास से पूछा तो विकास ने झूठ कह दिया मेरे पास नहीं है। अमन परेशान हो गया क्योंकि उसे पता था कि, उसे अपनी मम्मी की डांट खानी पड़ेगी। उसने अमन से कहा - कहीं तुम पेंसिल वॉशरूम में तो नहीं भूल आए ? अमन ने कहा - नहीं मैं तो यहीं रख के गया था।

अब अमन ने मैम को सारी बात बताई। मैम ने अमन के पास बैठे बच्चों के बैग देखने शुरू कर दिए। जैसे ही अमन की बारी आने वाली थी, छुट्टी की घंटी बजी । पेंसिल न मिली तो मैम ने अमन को नई पेंसिल लाने को कहा।

छुट्टी के समय विकास और अमन घर जा रहे थे। तो अमन के आंखों में आँसू आ गए की अब मम्मी की डाँट खानी पड़ेगी। विकास बहुत ही दु:खी हुआ कि उसने ऐसा काम क्यूँ किया? विकास ने उससे कहा - देख यार मैं तुझे एक बात बताता हूँ, पर कसम खाओ कि मेरी बात किसी से न कहोगे। अमन ने कहा - ठीक है यार नहीं कहूँगा क्या बात है ?

विकास ने कहा - तेरी पेंसिल मैंने छुपा दी थी और ये लो अपनी पेंसिल, पर इसके बारे में किसी को मत बताना। मुझे चोरी नहीं करनी चाहिए थी । अमन ने कहा ठीक है, अब अगर आप चोरी करना और झूठ बोलना छोड़ दोगे, तो मैं किसी से न कहूंगा। तब से विकास ने कभी भी चोरी नहीं की और न ही झूठ बोला। अमन के साथ उसकी दोस्ती पक्की रही ।

5. अता - पता लापता

अमन अपने परिवार के साथ मेले घूमने गया। मेले में भीड़ बहुत थी। वह अपने भाई का हाथ पकड़े हुआ था। अचानक भीड़ की वजह से उसका हाथ छूट गया। वह घबरा गया।

उसने आगे जाकर देखा तो उसे कोई नहीं मिला। उसके परिवार वाले उसे ढूंढने पीछे चले गए। अमन को अब कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह जोर-जोर से मम्मी - मम्मी पुकारने लगा। लेकिन मेले में शोर बहुत ज्यादा था।

तभी उसकी नजर एक पुलिसकर्मी पर पड़ी। उसने हिम्मत जुटा कर उन्हें पूरी बात बताई। पुलिसकर्मी ने अमन से उनके परिवारवालों का फ़ोन नंबर पूछा तो, अमन को किसी का भी नंबर याद नहीं था। पुलिसकर्मी ने उसे घर का पता पूछा तो, अमन को वो भी ढंग से याद नहीं था। तब पुलिसकर्मी ने अमन को समझाया कि, देखो अगर आपको अपनी ये जानकारियां पता होती तो हम आपको, परिवार से जल्द मिला देते। लेकिन अब थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा।

यह कहकर वह अमन को मेले के कैंप में ले गए। जहां से उन्होंने लाउडस्पीकर पर अमन के घर वालों के लिए संदेश भेजा। थोड़ी देर इंतजार के बाद अमन के घरवाले वहां आ गए और अमन से खुशी से लिपट गए।